(२) मैना के उलझ गये डैना

ले०—श्री बदरी नारायण सिनहा, एम०ए० आई०पी०एस०

(एक उपन्यास : चार कहानियाँ)

कहानी या उपन्यास के क्षेत्र में लेखक का पदार्पण एक घटना ! विज्ञ लेखक से मिला है समीक्षा, गद्य को नया मान; प्रस्तुत संकलन में कहानी और उपन्यास को नया मोड़। उपन्यास का आकार एकदम छोटा है पर पाट समुद्र जैसा, फैला सर्वव्यापी और पहचान हमारी, आपकी, सबों की।

मूल्य १)

शीघ्र प्रकाशित हो रही है:—

(३) प्रेरणा बोलती है पंखुड़ियाँ खोलती हैं

श्रीमती इन्दु सिन्हा, एम० ए०

हिन्दी की कवयित्री, गद्य लेखिका, श्रीमती इन्दु सिन्हा की कविताएँ संग्रहित हैं। वंदना, अर्चना, चिंतन, गीत, प्रगीत, पाँच खण्डों में संकलित इन रचनाओं में हिन्दी कविता की वर्त्तमान प्रेरणाएँ व्यक्त हैं। विधान, स्वर, प्रतीक में भी प्रतिनिधित्व है।

(४) माध्यमिकी

ले०—श्री बदरी नारायण सिनहा, एम०ए०, आई०पी०एस०

गणतंत्रोत्तर हिन्दी साहित्य के दस वर्षों का अध्ययन; सन १९५० से सन् १९६० ई० की गतिविधियों और उपलब्धियों का मूल्यांकन।

(५ आज तक की

ले०—श्री बदरी नारायण सिनहा, एम०ए०, आई०पी०एस०

अर्वाचीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन; सन् १९६१ से सन् १९६५ ई० की अवधि का साहित्यिक मूल्यांकन।

---

(६) अब बहु से सब जनहिताय : काव्य

रचयिता:—बदरी नारायण सिनहा, एम०ए०, आई०पी०एस०,

बापू की जीवनी के सात आलोक-स्तम्भों पर छंद में मानव के जीवन, इतिहास, संस्कृति, धर्म के विकास और संभावनाओं का गायन। बेजोड़!

---

(७) प्रतिनिधि गद्य :

ले०—श्री बदरी नारायण सिन्हा, एम०ए०, आई०पी०एस०
श्रीमती इन्दु सिनहा, एम०ए०

गद्य जिसकी आज सीमा नहीं अपनी सभी विधाओं में इस संकलन में प्रकट है। निबंध, लेख, स्केच, संस्मरण, टिप्पणी, सम्पादकीय, एकांकी की व्याख्या ही नहीं अपितु बानगी है। सर्वथा हिन्दी की विशिष्ट पत्र-पत्रिकाओं में चर्चित और सम्मानित। गद्य की वर्तमान निखार का एक सुन्दर संकलन।

सभी पुस्तकों के लिए पत्र-व्यवहार करें:—

श्री आनन्दवर्द्धन

श्री गणपत प्रकाशन, बोरिंग रोड,

पटना–१२

★ यह बुद्धि-श्रमजीवियों की अपनी प्रकाशन-संस्था है।
★ स्वतंत्र, अव्यावसायिक एवं हिन्दी की प्रगति से अनुप्रेरित यह प्रकाशन-माला है।
★ हिन्दी-साहित्य का प्रसार एकमात्र ध्येय है।

पुस्तक-प्राप्ति के स्थान:—

पारिजात प्रकाशन,
डाकबंगला रोड, पटना–१

ग्रन्थ-निकेतन,
भागलपुर–२

सन्मार्ग प्रकाशन,
दिल्ली–७

प्रगति प्रकाशन
आगरा–३

सुबोध ग्रन्थालय कार्य्यालय
अपर बाजार, राँची

तथा राज्य, देश की प्रमुख दूकानों में।

श्री गणपत प्रकाशन

पटना—(बिहार)

इसकी प्रकाशित पुस्तकें :

(१) प्राथमिकी

लेखक—श्री बदरी नारायण सिनहा, एम०ए०, आई०पी०एस०

समकालीन हिन्दी साहित्य

का

एक तटस्थ अध्ययन

सन् १९४४ से १९६४ ई० की अवधि की सभी साहित्यिक धाराओं और हिन्दी साहित्य के संबंधित अंशों का मौलिक निरूपण है। व्यक्ति या वाद के मोह या द्रोह से परे, प्रस्तुत विवेचन में हिन्दी साहित्य को युगीन, समकालीन एवं भारतीय पृष्ठभूमि में रख कर अध्ययन किया गया है। न तो इसमें अंग्रेजी समीक्षा का हिन्दी रूपान्तर है, न हिन्दी समीक्षा का कायान्तर।

हिन्दी की पत्रिकाओं में सम्मानित एवं हिन्दी के प्रायः सभी प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा आदरित।